संतों की वाणी

मीरा मगन भई हरि के गुण गाए।

सांप पिटारा राणा भज्या, मेरा हाथ दिया जाय।

न्हाय धोय जब देखन लागी, सालिगराम गई पाय।

जहर का प्याला राणा भेज्या,इमारत दिया बनाय।

न्हाय धोय जब पीवन लागी,हो गई अमर अंचाय।

सूली सेज राणा ने राणा ने भेजी,दीज्यो मीरा सुवाय।

सांच भाई मीरा सोवन लागी, मानो फूल बिछाय।

मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे विघन हटाय।

भाव भजन में मस्त डोलती गिरिधर पर बलि जाय।

व्याख्या- मीराबाई की आराध्य देव श्री कृष्ण थे। मीराबाई हरि के भजन गान में मगन रहती थी। मीराबाई राज परिवार की बहू थी।राज परिवार के लिए यह बड़ा अपमानजनक था कि वह दिन-रात मंदिर में बैठकर हरि के गुणगान में लगी रहती थी। जब उसे मारने के लिए राणा अर्थात उसके देवर ने पिटारे में विषैला सांप भरकर अपने सिपाहियों से भेजा और मीरा के हाथ में उसे दिया गया। नहा धोकर जब मीराबाई उस पिटारी को खोलकर देखी तो उसे शालिग्राम नाम एक पवित्र विष्णु रूपी पत्थर मिला।

जब विषैले सांप से मीरा नहीं मरी तो राणा ने अब उसके लिए ज़हर भरा प्याला भिजवाया किंतु कृष्ण ने उसे अमृत बना दिया। जब नहा धोकर वह आचमन कर अर्थात मंत्र उच्चारण कर उसे पीने लगी तो वह उसे पीकर अमर हो गई।

राणा जब विष के प्याले भेज कर मारने में विफल हुआ तो उसे मारने के लिए कांटो का शय्या भेजा किंतु सांझ के पश्चात पर जब मीरा उस पर सोने लगी तो कृष्ण की कृपा से उसे कांटो की शय्या फूलों की शय्या प्रतीत होने लगी। मीरा के प्रभु कृष्ण हमेशा मीरा की विपत्ति को, विघ्नों को हटाया और मीरा की सदा रक्षा की। कृष्ण सदा मीरा के सहायक रहें।

मीरा कृष्ण की भक्ति में अपने तन मन को समर्पित कर चुकी थी । मीरा कृष्ण के भाव भजन में मस्त रहती थी और वह आनंद के साथ नाचती गाती थी। वह कृष्ण के लिए अपने जीवन को न्योछावर कर दी थी।